FALCON

व्याकरण कस्तूरी

शिक्षक दिग्दर्शिका

1–5

व्याकरण-1

1. भाषा तथा भाषा के रूप

आओ अभ्यास करें

1. 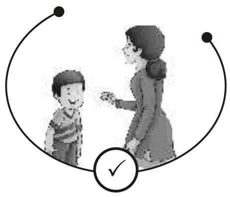 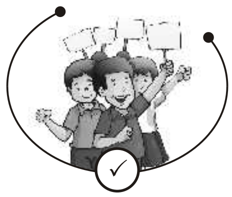

2. पूछना, बताना, सोचना, समझना और समझाना भाषा है।
3. भाषा के तीन रूप होते हैं—1. लिखित, 2. मौखिक, 3. सांकेतिक।
4. जो बात इशारों या संकेत द्वारा समझी व समझाई जाए, उसे सांकेतिक भाषा कहते है।

रचनात्मक कार्य

			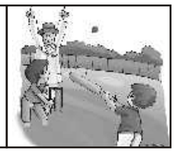
लिखित भाषा	मौखिक भाषा	लिखित भाषा	सांकेतिक भाषा

2. वर्ण एवं वर्णमाला

आओ अभ्यास करें

1. भाषा की सबसे छोटी ध्वनि 'वर्ण' या 'अक्षर' कहलाती है।
2. अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अ:
3. प्+ ै +र्+अ;=4 ब्+अ+स्+अ;=4
   म्+ओ+र्+अ;=4 ट्+अ+ब्+अ;=4
   ज्+अ+ल्+अ;=4 ह+आ+थ्+ई;=4
4. घ्+अ+र्+अ न्+अ+ल्+अ

रचनात्मक कार्य

हवाई जहाज

3. स्वरों की मात्राएँ

आओ अभ्यास करें

1.

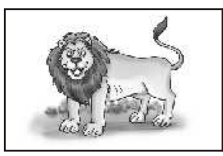		
शेर	गाय	रानी

2. इ = ि ओ = ो उ = ु आ = ा
3.

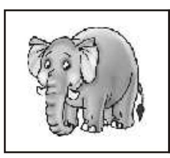		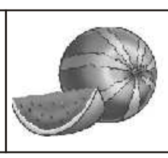	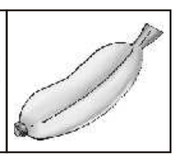
हाथी	खरगोश	तरबूज	केला

रचनात्मक कार्य

स्वयं कीजिए।

4. शब्दों तथा वाक्यों का ज्ञान

आओ अभ्यास करें

1.

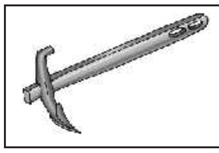	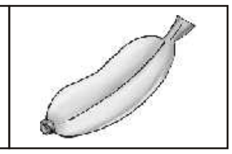
ह + ल	क् + ए + ल् + आ
हल	केला

2.

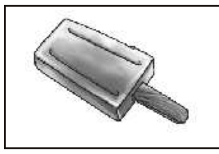	
यह एक आइसक्रीम है।	यह एक जूता है।

रचनात्मक कार्य

स्वयं कीजिए।

5. संज्ञा

आओ अभ्यास करें

1.

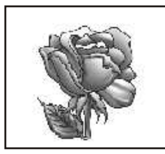	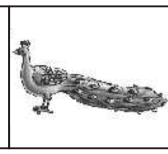	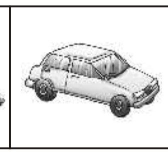	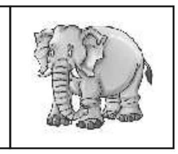
गुलाब	मोर	कार	हाथी

2. स्वयं कीजिए।
3. महात्मा गांधी गुलाब आम
   सुभाष चंद्र बोस कमल अनार

रचनात्मक कार्य

स्वयं कीजिए।

6. लिंग

आओ अभ्यास करें

1. शब्द के जिस रूप से किसी प्राणी अथवा वस्तु के पुरुष अथवा स्त्री जाति होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।
2. पुल्लिंग — आदमी, घोड़ा।
   स्त्रीलिंग — कोयल, नानी।
3. राजा → रानी
   घोड़ा → घोड़ी
   भाई → बहन
   गाय → बैल
   मामा → मामी

7. वचन

आओ अभ्यास करें

1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
2. शब्द के जिस रूप से 'एक संख्या' का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।
3. चिड़ियाँ, केले, संतरे।
4. गाड़ियाँ, चाभियाँ, केले, चिड़ियाँ
5. 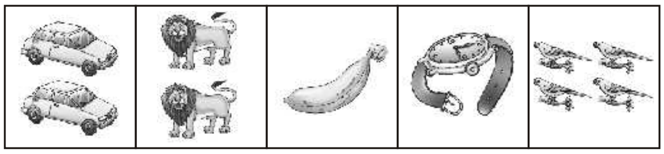

बहुवचन   बहुवचन   एकवचन   एकवचन   बहुवचन

रचनात्मक कार्य

स्वयं कीजिए।

8. सर्वनाम

आओ अभ्यास करें

1. (क) वह स्कूल जा रहा है।   (ख) वह काँव-काँव करता है।
   (ग) वह घास खा रही है।
2. (क) वह बहुत अच्छी लड़की है।   (ख) मैं सेब खा रहा हूँ।
   (ग) उसे गणित की पुस्तक दे दीजिए।   (घ) तुम कहाँ जा रहे हो?
3. (क) मैं, (ख) तुम, (ग) वह, (घ) तुम

रचनात्मक कार्य

आप, आप, तुम, आप

9. विशेषण

आओ अभ्यास करें

1.

मजबूत जूता   अच्छा आदमी   हरी घास

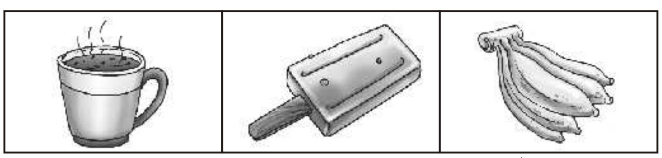

गरम चाय   ठंडी आइसक्रीम   पाँच केले

2. (क) मीठा, (ख) खट्टा, (ग) ठंडी, (घ) हरी

रचनात्मक कार्य

स्वयं कीजिए।

10. क्रिया

आओ अभ्यास करें

1. (क) चिल्ला, (ख) निकल, (ग) झूल, (घ) बैठी, (ङ) खेल
2. (क) डाल, (ख) काट, (ग) चला, (घ) पढ़ा, (ङ) देख, (च) बना

11. विलोम शब्द

आओ अभ्यास करें

1. उलटे अर्थ का बोध कराने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।
2. विपरीतार्थक शब्द
3. थोड़ा — अधिक
   मान — अपमान
   गुण — दोष
   प्रेम — घृणा
4. आशा → निराशा
   सुगंध → दुर्गंध
   भीतर → बाहर
   बड़ा → छोटा
5. ठंडा   पतला
   नीचे   प्रकाश

रचनात्मक कार्य

स्वयं कीजिए।

12. पत्र लेखन

आओ अभ्यास करें

1. हम अपनी बात को दूर तक पहुँचाने के लिए पत्र लिखते हैं।
2. हम पत्र अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों को लिख सकते हैं।
3. जन्मदिन की शुभकामनाएँ भेजने के लिए।
   किसी शुभ अवसर पर आमंत्रित करने के लिए।
4. सेवा में,
   श्रीमान प्राधानाचार्य जी,
   दिल्ली पब्लिक स्कूल, देहरादून
   महोदय,
   सविनय निवेदन यह है कि मुझे आज सुबह से बुखर हो रहा है। इसलिए मैं दो दिन तक विद्यालय आने में असमर्थ रहूँगा। अत: आप मुझे दिनांक ______ से ______ तक का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।
   मैं सदैव आपका आभरी रहूँगा।
   दिनांक : ______
   आपका आज्ञाकारी शिष्य
   अनुज शर्मा
   कक्षा-1
5. स्वयं कीजिए।

13. कहानी लेखन

आओ अभ्यास करें

1. स्वयं कीजिए।
2. एक गरीब लकड़हारा था। वह **लकड़ियाँ** बेचकर अपनी **गुजर-बसर** करता था। वह एक दिन **जंगल मे लकड़ी** काट रहा था। उसकी कुल्हाड़ी **अचानक नदी** में गिर गई। वह बहुत **रोया**। नदी में **जल देवता** प्रकट हुए। वे अपने हाथ में **सोने** की कुल्हाड़ी लेकर प्रकट हुए। उन्होने लकड़हारे से पूछा—क्या यही तुम्हारी **कुलहाड़ी** है ? लकड़हारे ने कहा , **नही देवता**। जल देवता फिर चाँदी की **कुलहाड़ी** लेकर प्रकट हुए और फिर पूछा। किंतु लकड़हारे ने स्पष्ट **मना कर** दिया। फिर जल **देवता** लोहे की **कुलहाड़ी** लेकर प्रकट हुए। लकड़हारे ने कहा **यह मेरी कुल्हाड़ी** है। जल देवता ने **प्रसन्न** होकर उसे तीनों **कुल्हाड़ियाँ** दे दी।

14. निबंध लेखन

आओ अभ्यास करें

1. किसी विषय पर अपने विचारों को क्रम से प्रस्तुत करना निबंध कहलाता है।
2. स्वयं कीजिए।

15. दिन और महीने

आओ अभ्यास करें

(क) सात, (ख) सोमवार, (ग) बारह (12), (घ) रविवार, (ङ) बारह (12), (च) गुरूवार

व्याकरण-2

1. भाषा तथा भाषा के रूप

आओ अभ्यास करें

1. 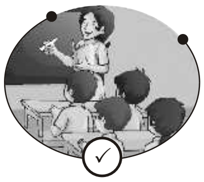

2. हम बोलकर, लिखकर, सुनकर, पढ़कर अपनी बातचीत को दूसरों के सामने व्यक्त करते हैं तथा दूसरों के द्वारा कही हुई बातों को हम समझ लेते हैं। इसे हम भाषा कहते हैं।

   रूप → मौखिक भाषा, लिखित भाषा, सांकेतिक भाषा।
3. जब हम लिखकर अपनी बात को प्रकट करते है; तो उसे लिखित भाषा कहते है।
4. क्रिकेट मैच का दृश्य है। खिलाड़ी आउट हो गया है। अंपायर आउट होने का इशारा कर रहा है। सब अंपायर का संकेत देखकर उसकी बात समझ रहे हैं—यह भाषा का सांकेतिक रूप है।

रचनात्मक कार्य

(क) मैंSS-मैंSS, (ख) म्याऊँ-म्याऊँ, (ग) भौं-भौं, (घ) टर्र-टर्र, (ङ) हिनहिनाना, (च) काँव-काँव

2. वर्ण एवं वर्णमाला

आओ अभ्यास करें

1. प् + ऊ + ज् + आ = **पूजा** त् + आ + ल् + आ = **ताला**

   भ् + आ + ल् + ऊ = **भालू**
2. वर्णमाला में 11 स्वर होते हैं—

   अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
3. **स्वर** – आ ओ ई ए ऊ औ

   व्यंजन – क ज न ल ट म

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

3. मात्रा वाले शब्द

आओ अभ्यास करें

1. स्वरों के कुछ चिह्न होते हैं, उन्हें मात्रा कहते हैं।
2. ताला, दिन, नदी, सुनार, धूल, बादल।
3.

सेब	केला	संतरा

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

4. शब्द ज्ञान

आओ अभ्यास करें

1.

ऊँट	नल	सेब	भालू

हाँ (✓)

2. शब्द, वर्णों के मेल से बनते हैं।
3. जिन शब्दों का अर्थ या भाव प्रकट हो, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं।
4. जिन शब्दों का अर्थ या भाव प्रकट न हो, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं।
5. सार्थक = कमल, ठेला, हवन, कपास, महिला, हिपना

   निरर्थक = बललल, बोतोतोतो, जललल, पपास, पपिपा, तिसुसू

रचनात्मक कार्य

ज	हा	ज			
ब	र	त	न		
ह	वा	म	ह	ल	
सं	ग	म	र	म	र

ह	ल			
गु	ला	ब		
क	बू	त	र	
रा	ज	म	ह	ल

5. वाक्य-निर्माण

आओ अभ्यास करें

1. शब्दों के मेल से बना सार्थक-समूह वाक्य कहलाता है।
2. उद्देश्य वह होता है जिसके बारे में कुछ कहा जाता है।
3. उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, वह विधेय कहलाता है।
4. (क) 5 (ख) 4
5.

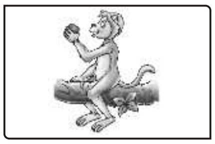

बंदर डाली पर बैठा है।

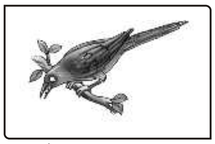

कौआ काँव-काँव कर रहा है।

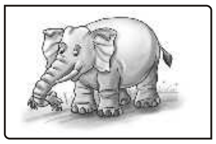

हाथी घास खा रहा है।

6.

	उद्देश्य	विधेय
(क)	वह	बहुत शरारती है।
(ख)	राम	आज दिल्ली जाएगा।
(ग)	प्रताप	मेरा अच्छा मित्र है।
(घ)	मोहन	कल मुंबई गया था।
(ङ)	हाथी	बहुत मोटा है।
(च)	बकरी	दूध देती है।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

6. संज्ञा

आओ अभ्यास करें

1.

बिल्ली

क्रोध

कुतुबमीनार

इंदिरा गांधी

2. जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी, भाव अथवा गुण के नाम का बोध कराते हैं, उन्हें संज्ञा कहते हैं।
3. वे संज्ञाएँ जो किसी विशेष व्यक्ति/वस्तु/स्थान/प्राणी के नाम का बोध कराती हैं, व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं।
4. वे संज्ञाएँ जो किसी वर्ग या समूह का बोध कराती हैं, जातिवाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं।
5. (क) मोहन, कबूतर (ख) सीता (ग) लालकिला
6. बंदर केला खा रहा है।
   क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।
   हाथी बहुत ताकतवर जानवर है।
   छाता हमे वर्षा से बचाता है।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

7. लिंग

आओ अभ्यास करें

1. पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराने वाले संज्ञा शब्दों को हम लिंग कहते हैं।
2. लिंग के दो भेद होते हैं—
   1. पुल्लिंग तथा 2. स्त्रीलिंग
3. जो संज्ञा शब्द हमें पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।
4. औरत रानी चाबी
5. पुल्लिंग पुल्लिंग स्त्रीलिंग
6. मोरनी हथिनी
   बिलौटा नौकर

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

8. वचन

आओ अभ्यास करें

1. व्यक्ति/प्राणी/वस्तु/स्थान की संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को हम वचन कहते हैं।
2. वचन के दो भेद होते हैं—
   1. एकवचन तथा 2. बहुवचन
3. शब्द के जिस रूप से 'एक' प्राणी या वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।
4. घोड़े तितलियाँ चिड़ियाँ
5. 'एक वस्तु' एकवचन व 'अनेक वस्तुएँ' बहुवचन कहलाती हैं।
6.

एकवचन

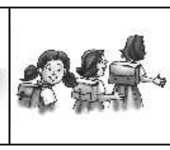

बहुवचन

एकवचन

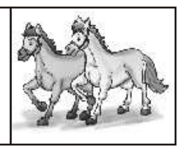

बहुवचन

9. सर्वनाम

आओ अभ्यास करें

1. (क) वह (ख) तुम (ग) वह
2. वह काम कर रहा है।
   आप कहाँ जा रहे हो?
   तुम एक अच्छी लड़की हो।
   हम भी आम खाएँगें।
3. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
4. बड़ों के लिए आप सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
5. (क) मैं (ख) वे (ग) तुम
   (घ) हम (ङ) तू (च) उसे

(छ) आप; मैं

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

10. विशेषण

आओ अभ्यास करें

1.

काला सुंदर मोटा

2.

सेब आदमी टमाटर

3. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं।
4. जिन शब्दों (संज्ञा/सर्वनाम) की विशेषताएँ बताई जाती हैं, वे विशेष्य कहलाते हैं।
5.

विशेषण	**विशेष्य**
सुंदर	चिड़िया
मोटा	आदमी
चतुर	कौआ

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

11. क्रिया

आओ अभ्यास करें

1. जिन शब्दों से किसी कार्य का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।
2. क्रिया को जो व्यक्ति/प्राणी करता है, उसे कर्त्ता कहते हैं।
3. 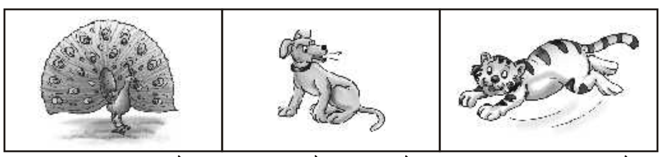

मोर नाच रहा है। कुत्ता भौंक रहा है। बिल्ली कूद रही है।

4.

क्रिया	**कर्त्ता**
(क) सोया	मोहन
(ख) दौड़ा	घोड़ा
(ग) भागा	चोर
(घ) स्कूल गई	रमा
(ङ) पानी पीया	रामू

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

12. पर्यायवाची शब्द

आओ अभ्यास करें

1. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।
2. गगन; नभ; आसमान हवा, वायु, समीर

   पुत्र; सुत; सुपुत्र राशि; सुधाकर; निशाचर
3. लक्ष्मी → कमला

   स्त्री → नारी

   नृप → राजा

   निशा → रात

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

13. पत्र लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

14. कहानी लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

15. निबंध लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

व्याकरण-3

1. भाषा

आओ अभ्यास करें

1. (क) भाषा मन के भाव प्रकट करने का साधन है।

(ख) भाषा के मुख्यत: तीन रूप होते हैं—

1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा 3. सांकेतिक भाषा

मौखिक भाषा – जो भाषा मुख से बोली जाए और कानों से सुनी जाए, वह भाषा का मौखिक रूप कहलाता है।

(ग) अपने परिवार के बीच रहकर बच्चों द्वारा अपनी माता से सीखी हुई भाषा मातृभाषा कहलाती है।

(घ) देश में रहने वाले अधिकांश लोग बातचीत करने में जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, वह राष्ट्रभाषा कहलाती है।

(ङ) प्रत्येक भाषा को अलग-अलग तरीके से लिखा जाता है लिखने का यह ढंग ही लिपि कहलाता है।

हिंदी, गुजराती, मराठी आदि भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। अंग्रेजी रोमन लिपि में, पंजाबी गुरुमुखी लिपि में और उर्दू भाषा फारसी लिपि में लिखी जाती है।

2. (क) भाषा, (ख) लिपि, (ग) देवनागरी, (घ) लिखकर, (ङ) राजभाषा।

3. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ×, (घ) ×, (ङ) ✓, (च) ✓

गुरुमुखी	अंग्रेजी
देवनागरी	उर्दू
रोमन	हिंदी
फारसी	पंजाबी

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

2. वर्ण एवं वर्णमाला

आओ अभ्यास करें

1. (क) जिस मूल ध्वनि के और अधिक टुकड़े न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं।

(ख) वर्णों के दो भेद होते हैं—

1. सहायता पाने वाले वर्ण तथा

2. सहायता देने वाले वर्ण

(ग) जिन वर्णों पर मात्राएँ लगती हैं उन्हें व्यंजन कहते है।

(घ) हिंदी के स्वर

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

हिंदी के व्यंजन

क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

(ङ) अयोगवाह न तो स्वर होते हैं और न ही व्यंजन। अयोगवाह तीन प्रकार के होते हैं—

(i) अनुस्वार—'अं' के बिंदु वाले शब्द।

(ii) अनुनासिक—'चंद्रबिंदु (ँ) वाले शब्द।

(iii) विसर्ग—'अः' वाले शब्द।

(च) **अंत:स्थ व्यंजन**

य, र, ल, व

ऊष्म व्यंजन

श, ष, स, ह

2.

दीर्घ स्वर	ड़, ढ़
ह्रस्व स्वर	श, ष, स
स्पर्श व्यंजन	अ, इ, उ
ऊष्म व्यंजन	ओ, औ, आ
अतिरिक्त वर्ण	ट, ठ, ड, ढ

3. (क) कंठ, (ख) ओष्ठ, (ग) ट वर्ग, (घ) सहायता देने वाले

4. (क) ✓, (ख) ×, (ग) ×

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

3. शब्द तथा वाक्य

आओ अभ्यास करें

1. (क) वर्णों के योग से शब्द बनता है।

(ख) शब्द मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं—

(1) सार्थक शब्द और (2) निरर्थक शब्द

(ग) दो या दो से अधिक शब्दों का ऐसा समूह जिसका कोई अर्थ हो, वाक्य कहलाता है।

वाक्य के दो भेद होते हैं—

(1) उद्देश्य और (2) विधेय।

(घ) वर्णों से मिलकर बने वे शब्द जिनका कोई अर्थ निकले, सार्थक शब्द कहलाते हैं।

(ङ) उद्देश्य – वाक्य में, जिसके बारे में कुछ कहा जाए, वह उद्देश्य कहलाता है।

विधेय – वाक्य के अंतर्गत, उद्देश्य के बारें में जो कुछ कहा जाता है, वह विधेय कहलाता है।

2. हमें बड़ों का कहना मानना चाहिए।

हमें बड़ों का आशीर्वाद लेना चाहिए।

3.

बकरी	अध्यापक
खरगोश	छात्राएँ
शुभम	गाय

4. (क) मोर नाच रहा है।

(ख) मैं कल दिल्ली जाऊँगा।

(ग) बच्चा घर पर सो रहा था।

(घ) मौसी बाजार गई है।

5.

✓	✓	✓
×	×	✓
×	✓	×

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

4. संज्ञा

आओ अभ्यास करें

1. (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भावों के नामों को संज्ञा कहते हैं।

(ख) जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति/प्राणी अथवा वस्तु/स्थान आदि के नाम का बोध हो, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे—मोहन, गीता, ईरान आदि।

(ग) भाई, कुम्हार।

(घ) किसी व्यक्ति/वस्तु के गुण-दोष/भाव/दशा/अवस्था आदि का बोध कराने वाले शब्दों को 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे—शैशव, नारीत्व, सुख आदि।

(ङ) संज्ञा के तीन भेद होते है—

व्यक्तिवाचक संज्ञा — महात्मा गांधी

जातिवाचक संज्ञा — छात्र

भाववाचक संज्ञा — मित्रता

2. मेरा स्कूल घर के पास स्थित है।

सरदार भगतसिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे।

हमें सभी के साथ खुशी से रहना चाहिए।

बंदर केला खाता है।

ताजमहल आगरा में स्थित है।

3. × ✓ ×

✓ ✓ ✓

4. (क) घर, (ख) नदी, (ग) तरबूज, (घ) कर्मचारी

5.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मीनाक्षी मंदिर	पेड़-पौधे	सुगंध
श्रीलंका	स्टेडियम	भलाई
रामायण	शिक्षक	गरीबी

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

5. लिंग

आओ अभ्यास करें

1. (क) संज्ञा के जिस रूप से पुरुष (नर) अथवा स्त्री (मादा) जाति का बोध हो, वह 'लिंग' कहलाता है।

(ख) लिंग के दो भेद होते हैं—(1) पुल्लिग (नर जाति) और (2) स्त्रीलिंग (मादा जाति)।

(ग) पुल्लिंग — बैल, लड़का, हाथी, बकरा।

स्त्रीलिंग — गाय, लड़की, हथिनी, बकरी।

(घ) जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें 'पुल्लिग' कहते हैं; जैसे—बैल, लड़का, हाथी।

(ङ) जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें 'स्त्रीलिंग' कहते हैं।

2. पुत्री — सिंहनी

नायिका — हथिनी

बहन — चूहिया

3. (क) नौकरानी ने बाग में पानी नहीं लगाया।

(ख) बंदरिया छत से कूदी।

(ग) इस लेखिका ने अच्छा लेख लिखा।

(घ) मालिन पकौड़े खाती है।

4. मुरगी → मुरगा

बाघिन → बाघ

चींटी → चींटा

मौसा → मौसी

बालक → बालिका

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

6. वचन

आओ अभ्यास करें

1. (क) संख्या का बोध कराने वाले शब्द 'वचन' कहलाते हैं।

(ख) वचन दो प्रकार के होते हैं—(1) एकवचन तथा (2) बहुवचन।

(ग) शब्द के जिस रूप से व्यक्ति/प्राणी/वस्तु की संख्या में 'एक' होने का बोध होता है, उसे 'एकवचन' कहते हैं।

(घ) शब्द के जिस रूप से व्यक्ति/प्राणी/वस्तु की 'एक से अधिक' संख्या का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं।

2. बातें — कविता

पंखें — गाय

दवाईयाँ — कौआ

चिड़ियाँ — प्याली

3. एक एक बहु

बहु बहु एक

एक एक बहु

4. मक्खियाँ खाने पर बैठ रही हैं।

हमें अपना कमरा साफ रखना चाहिए।

मेरे मित्र को सभी कलाएँ आती है।

मेरे पास बारह पुस्तकें हैं।

5. (क) गायें मीठा दूध देती हैं।

(ख) बिल्लियाँ घूम रही हैं।

(ग) लड़का खाना खा रहा है।

(घ) बच्चें रो रहे हैं।

रचनात्मक कार्य

- स्वयं करें।

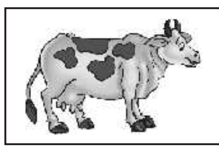
एकवचन

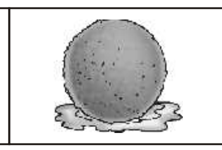
एकवचन

बहुवचन

बहुवचन

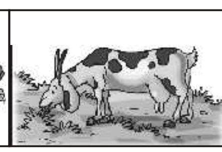
एकवचन

बहुवचन

7. सर्वनाम

आओ अभ्यास करें

1. (क) संज्ञा के स्थान पर बोले जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

(ख) सर्वनाम के निम्नलिखित छह भेद हैं—

(1) पुरुषवाचक (2) निश्चयवाचक (3) अनिश्चयवाचक

(4) संबंधवाचक (5) प्रश्नवाचक (6) निजवाचक

(ग) जो सर्वनाम शब्द किसी पुरुष के नाम के स्थान पर प्रयोग में लाए जाते हैं, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

मैं, तुम, हम, आप, वह, वे

(घ) स्वयं, अपने-आप, स्वत: ही, खुद, निज।

(ङ) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी निश्चित वस्तु/प्राणी के लिए किया जाता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

2. (क) जैसा, वैसा (ख) कुछ

(ग) वह (घ) कहाँ

3. वह मेरा मित्र है।

मैं दिल्ली जा रहा हूँ।

मैं यह पुस्तक किसे दूँ?

तुम कौन हो?

ये क्या कर रहे हो!

तू पढ़ रहा है।

4. यह पुस्तक रवि की है।

इनका घर करोल बाग में है।

वह इमारत चारमीनार है।

इन्हें चाय लाकर दीजिए।

5. (क) उन्हें, (ख) वह, (ग) क्यों, (घ) इन्हें।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

8. क्रिया

आओ अभ्यास करें

1. (क) जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का बोध हो, वे क्रिया कहलाते हैं।

(ख) बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं।

पक्षी चहचहा रहे है।

(ग) जिन क्रियाओं में कर्म नहीं होता, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे—

(i) सपना दौड़ रही है।

जिन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म होता है, वे सकर्मक कियाएँ कहलाती हैं; जैसे—

(i) माली पौधों को सींच रहा है।

(घ) क्रिया का निर्माण धातु से होता है।

(ड़) अकर्मक क्रिया का शाब्दिक अर्थ इस प्रकार है—

अ + कर्मक

रहित + कर्म अर्थात्—'कर्म रहित' या 'कर्म के बिना'।

सकर्मक क्रिया का शाब्दिक अर्थ इस प्रकार है—

स + कर्मक

सहित + कर्म अर्थात्—कर्म सहित

2. (क) जाना, (ख) जागना, (ग) खाना, (घ) धोना, (ङ) पढ़ना, (च) पीना

3.

	कर्ता	कर्म	क्रिया
(क)	मोहन	गाना	गा रहा है।
(ख)	पक्षी	आकाश में	उड़ रहे हैं।
(ग)	राधा	गीता	पढ़ रही है।
(घ)	अध्यापक	बच्चों को	पढ़ा चुके है।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

9. विशेषण

आओ अभ्यास करें

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

(ख) विशेषण के चार भेद हैं—

(1) गुणवाचक विशेषण (2) संख्यावाचक विशेषण

(3) परिमाणवाचक विशेषण (4) संकेतवाचक विशेषण

(ग) गुण, दोष, अवस्था, रंग-रूप संबंधी विशेषता बताने वाले शब्दों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(घ) वह, वे।

2.

	विशेषण	विशेष्य
(क)	एक	कप
(ख)	पाँच	बंदर
(ग)	पतला	बालक
(घ)	कुछ	छात्र
(ङ)	ईमानदार	लड़का

3.

मोटा	आदमी
काला	कोट
भारी	वजन
भीगे	कपड़े
कटी	पतंग
खट्टा	दही

4. (क) शर्मिला, (ख) गरमी, (ग) चटकीले, (घ) भड़काऊ।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

10. कारक

आओ अभ्यास करें

1. (क) वाक्य में आए हुए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का उस वाक्य की क्रिया से जो संबंध होता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

(ख) कारक के आठ भेद—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान अपादान, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन; होते हैं।

(ग) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध (लगाव, स्वत्व, अपनापन) किसी और व्यक्ति/वस्तु से प्रकट हो, उसे संबंध कारक कहते हैं।

(घ) (क) रमेश ने गरीबों को कंबल दिए।
(ख) वर्णिका के लिए उपहार दिए।

(ङ) प्रत्येक कारक का कोई-न-कोई कारक चिह्न होता हैं; जैसे—कर्ता का कारक चिह्न 'ने' तथा कर्म का 'को' है।

2. (क) पुकारना, (ख) के लिए; को, (ग) ने, (घ) में; पर, (ङ) से; के द्वारा, (च) का; की; के; रा; री; रे, (छ) से, (ज) को

3.

कर्ता	में, पर
कर्म	को
सम्प्रदान	ने
अपादान	हे!
संबंध	को, के लिए
अधिकरण	से (पृथक् होने के लिए)
संबोधन	के द्वारा, से
करण	का, की, के

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

11. शब्द भंडार

आओ अभ्यास करें

1. (क) 'उलटा अर्थ' प्रकट करने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।

(ख) 'समान अर्थ' प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

(ग) वह उचित एवं उपयुक्त शब्द जो वाक्यांश अथवा अनेक शब्दों के लिए एक शीर्षक का कार्य करता है, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहलाता है।

2. (क) कठोर, (ख) निर्यात, (ग) अपकार, (घ) निरक्षर

3. (क) सरिता, तटिनी, तरंगिणी (ख) निशा, रात्रि, रजनी
(ग) भूपति, नरेश, नृप (घ) नीरज, अंबुज, पंकज

4. (क) श्रम्य, (ख) वाचाल, (ग) नभचर, (घ) अजय, (ङ) दुर्लभ, (च) आस्तिक

5. (क) पीतांबर, (ख) शाप, (ग) अनर्थ, (घ) सुधा, (ङ) अनल, (च) दुर्लभ, (छ) विदेशी

12. कैलेंडर और त्योहार

आओ अभ्यास करें

1. (क) शुक्रवार; शनिवार, (ख) बृहस्पतिवार, (ग) मई, (घ) अगस्त, (ङ) दो, (च) गांधी जयंती

2. (क) (v), (ख) (iii), (ग) (iv), (घ) (ii), (ङ) (i)

3. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ×, (घ) ✓, (ङ) ×, (च) ✓, (छ) ×, (ज) ✓

13. पत्र लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

14. कहानी लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

15. निबंध लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

व्याकरण-4

1. भाषा

आओ अभ्यास करें

1. (क) भावों अथवा विचारों के आदान-प्रदान करने के माध्यम को हम भाषा कहते हैं।

(ख) भाषा के दो रूप हैं: 1. मौखिक भाषा और 2. लिखित भाषा।

मौखिक भाषा—बोलना अर्थात् मौखिक रूप भाषा का पहला रूप है। इसमें बोलकर अपनी बात कही जाती है और दूसरा उसे सुनकर समझता है। उदाहरण— मोबाइल, टेलीविजन।

लिखित भाषा—लिखना अर्थात् लिखित रूप भाषा का दूसरा रूप है। इसमें लिखकर अपनी बात दूसरों तक पहुँचाई जाती है और दूसरा उसे पढ़कर समझता है।

उदाहरण—

		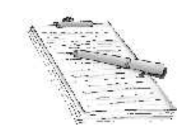
समाचार-पत्र	पुस्तक	प्रार्थना-पत्र

(ग) भारत के विभिन्न राज्यों में अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती है; जैसे—

- महाराष्ट्र- मराठी • मणिपुर- मणिपुरी • आंध्र प्रदेश- तेलुगू
- गुजरात- गुजराती • राजस्थान- राजस्थानी • केरल- मलयालम

(घ) राष्ट्रभाषा

जिस भाषा का प्रयोग राष्ट्र के अधिकांश लोग आपसी बातचीत में करते हैं अथवा जिस भाषा में वे अपने विचार प्रकट करते हैं, उस भाषा को राष्ट्रभाषा कहते हैं।

हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिंदी है।

मातृभाषा

बालक द्वारा घर में अपनी माता से सीखी हुई भाषा को मातृभाषा कहते हैं।

(ङ) जब हम किसी भाषा को बोलते हैं तो मुख से तरह-तरह की ध्वनियाँ निकलती हैं। ये ध्वनियाँ लिखी भी जा सकती हैं। इनको लिखने के लिए कुछ चिह्न प्रयुक्त होते हैं। ये चिह्न ही लिपि कहलाते हैं।

(च) भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।

2. (क) लिखित; मौखिक, (ख) मौखिक, (ग) लिपि, (घ) शुद्ध रूप, (ङ) राजस्थानी; जापानी

3. (क) ×, (ख) ✓, (ग) ×, (घ) ×, (ङ) ✓

4.

हरियाणवी	पंजाबी भाषा की लिपि
ABCD	राष्ट्रभाषा
कारक	बोली
गुरुमुखी	व्याकरण का विषय
हिंदी	रोमन लिपि

रचनात्मक कार्य

(ख) रोमन, (ग) गुरूमुखी, (घ) फारसी, (ङ) (च)

2. वर्ण विचार

आओ अभ्यास करें

1. (क) किसी छोटी से छोटी ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं।

(ख) **स्वर :** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन : क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, अं, अँ, अः, ड़, ढ़

(ग) व्यंजन चार प्रकार के होते हैं—(1) स्पर्श, (2) अन्त:स्थ, (3) ऊष्म तथा (4) संयुक्त व्यंजन।

स्पर्श व्यंजन—क से म।

अत:स्थ व्यंजन—य, र, ल, व।

ऊष्म व्यंजन—श, ष, स, ह।

संयुक्त व्यंजन—क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

(घ) स्वयं कीजिए।

2. (क) कमल, (ख) सवेरा, (ग) कुत्ता, (घ) बकरी

3. (क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ×

4.

(क)	(ख)
अयोगवाह	य, र, ल, व
अन्य वर्ण	क, ख, ग, घ
अंत:स्थ व्यंजन	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र
ऊष्म व्यंजन	अँ, अं, अ:
स्पर्श व्यंजन	ड़, ढ़
संयुक्त व्यंजन	श, ष, स, ह

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

3. शब्द विचार

आओ अभ्यास करें

1. (क) दो या दो से अधिक वर्णों के योग को शब्द कहते हैं।

(ख) हिंदी भाषा में शब्द के अनेक भेद-उपभेद होते हैं, जो इस प्रकार हैं—

1. उत्पत्ति के आधार पर 2. अर्थ के आधार पर

3. रचना के आधार पर 4. प्रयोग के आधार पर

(ग) उत्पत्ति के आधार पर—(क) तत्सम शब्द, (ख) तद्भव शब्द, (ग) देशज शब्द तथा (घ) विदेशी शब्द

(घ) सार्थक शब्द—ऐसे शब्द जिनका कुछ-न-कुछ अर्थ अवश्य निकलता हो, सार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे—मानव, पानी, संसार, दवाई, शहर, बादल, पीटना, खेलना, दौड़ना, हाथी, बसेरा।

निरर्थक शब्द—ऐसे शब्द जिनका कोई अर्थ नहीं होता, निरर्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे—वानव, वानी, वंसार, ववाई, वहर, वादल, वीटना, वेलना, वौड़ना, वाथी, वसेरा आदि।

(ङ) प्रयोग के आधार पर शब्द के निम्नलिखित दो भेद हैं—

(क) विकारी शब्द (ख) अविकारी शब्द।

(च) रूढ़ शब्द—जिन शब्दों के टुकड़ों का कोई अर्थ नहीं होता, रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे—मकान, बरगद, पानी, बेसन, संतरा, कुटिया, बगीचा, मंगल, हवा, नहर, कमर, पेट आदि।

(छ) यौगिक शब्द—ऐसे शब्द जिनके टुकड़े तो हो सकते हैं, किंतु उनमें से प्रत्येक का कोई विशेष अर्थ नहीं होता, ऐसे शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे—हवामहल (हवा + महल), कुतुबमीनार (कुतुब + मीनार), गोलगुंबद (गोल + गुंबद), चिड़ियाघर (चिड़िया + घर), लालकिला (लाल + किला), घंटाघर (घंटा + घर)।

(ज) तत्सम शब्द – पृथ्वी, हाथ, दृश्य

तद्भव शब्द – उल्लू, कान, आग

2. 1. जल, 2. नल, 3. नहर, 4. घर, 5. गम, 6. शलजम

3.

विदेशी शब्द	तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	निरर्थक शब्द
मशीन	हस्त	गाय	वाय
स्टेशन	जल	दाँत	वस्त
इशारा	पुत्र	रात्रि	वानव

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

4. वाक्य विचार

आओ अभ्यास करें

1. (क) शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

(ख) वाक्य के दो अंग—(1) उद्देश्य तथा (2) विधेय होते हैं।

(ग) वाक्य मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं—

1. साधारण वाक्य

जैसे—मनोज स्कूल जाता है।

2. नकारात्मक वाक्य

जैसे—मनोज स्कूल नहीं जाता है।

3. प्रश्नवाचक वाक्य

जैसे—क्या मनोज स्कूल जाता है?

4. आज्ञार्थक वाक्य

जैसे—मनोज, स्कूल जाओ।

(घ) 1. मैं खाना खाता हूँ। मैं खाना नहीं खाता हूँ।

2. वह दिल्ली गया है। वह दिल्ली नहीं गया है।

3. श्याम जा रहा है। श्याम नहीं जा रहा है।

2. (क) राम सुबह बाजार गया है।

(ख) मैं कल बस से दिल्ली जाऊँगा।

(ग) हरीश अपने मामा के घर गया है।

(घ) हर्ष मेरे साथ दौड़ता है।

(ङ) राम ने रावण का वध किया।

3.

	उद्देश्य	विधेय
(क)	मोहन	किताब पढ़ रहा है।
(ख)	पराग	खाना खा रहा है।
(ग)	हरीश	मथुरा जायेगा।
(घ)	पक्षी	चहचहा रहे हैं।
(ङ)	गधा	बोझ ढोता है।
(च)	ईश्वर	को याद करना चाहिए।

4. (क) रमेश अपनी दीदी के साथ दिल्ली नहीं गया है।

(ख) क्या रमेश अपनी दीदी के साथ दिल्ली गया है?

(ग) रमेश, अपनी दीदी के साथ दिल्ली जाओ।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

5. संज्ञा

आओ अभ्यास करें

1. (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।

(ख) संज्ञा के प्रमुख पाँच भेद होते हैं—(1) व्यक्तिवाचक, (2) जातिवाचक, (3) भाववाचक, (4) द्रव्यवाचक तथा (5) समूहवाचक।

(ग)

व्यक्तिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
• महात्मा गांधी	• बचपन
• ताजमहल	• बुढ़ापा
• चंद्रमा	• खटास

(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा—जिन शब्दों से किसी द्रव्य, धातु अथवा पदार्थ का ज्ञान हो, वे द्रव्यवाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं।

जातिवाचक संज्ञा—जिन शब्दों से किसी जाति के सभी प्राणियों अथवा पदार्थों का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ङ) कक्षा, टोली, सेना, झुंड।

(च) किसी जाति विशेष के सभी प्राणियों या पदार्थों के नाम जातिवाचक संज्ञाएँ होते हैं।

किसी प्राणी/पदार्थ के गुण-दोष, भाव, दशा तथा अवस्था आदि भाववाचक संज्ञाएँ होती हैं।

2. (क) राधा (✓)

(ख) कृपा (✓)

(ग) मैदान (✓)

(घ) सेना (✓)

3. (क) सुंदरता, (ख) अच्छाई, (ग) कश्मीर, (घ) घर

4.

	संज्ञा शब्द	संज्ञा के भेद
(क)	फूल	द्रव्यवाचक संज्ञा
(ख)	राजू, मंजीत	व्यक्तिवाचक संज्ञा
(ग)	सेना	समूहवाचक संज्ञा
(घ)	सोना	द्रव्यवाचक संज्ञा

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

6. लिंग

आओ अभ्यास करें

1. (क) पुरुष अथवा स्त्री जाति की पहचान कराने वाले शब्द 'लिंग' कहलाते हैं।

(ख) लिंग दो प्रकार के होते हैं—(1) पुल्लिंग तथा (2) स्त्रीलिंग।

(ग) पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को 'पुल्लिंग' कहते हैं।

स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को 'स्त्रीलिंग' कहते हैं।

(घ) पुल्लिंग — शेर, मोर, बैल, बालक

स्त्रीलिंग — शेरनी, मोरनी, गाय, बालिका

2.

बालिका	पाठिका	शेर
वधू	नारी	ससुर
गुरूआइन	बूढ़ी	बैल

3.

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	पुल्लिंग
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग

4. (क) शिक्षिका पढ़ा रही हैं।

(ख) बैल घास चर रहा है।

(ग) सेठानी जी टहल रही हैं।

(घ) भिखारिन भीख माँग रही है।

(ङ) साधवी दरवाजे पर खड़ी है।

5.

पुल्लिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
पुल्लिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

7. वचन

आओ अभ्यास करें

1. (क) शब्द के जिस रूप से संज्ञा या सर्वनाम के 'एक' या 'अनेक' होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

(ख) वचन मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं—

(1) एकवचन तथा (2) बहुवचन

(ग) शब्द के जिस रूप से 'एक' वस्तु या प्राणी होने का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं।

शब्द के जिस रूप से 'एक से अधिक' वस्तु या प्राणी होने का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं।

2. बच्चा — रुपए

मक्खियाँ — नदियाँ

डिबियाँ — बहु

ऋतुएँ — कविताएँ

आँख — सड़कें

3. एकवचन – सड़क, छात्रा, हाथ, ऋतु, कौआ

बहुवचन – रातें, बहुएँ, नदियाँ, आँखे, माताएँ

4. (क) मोरनियाँ, (ख) स्त्रियाँ, (ग) संतरे, (घ) कंघे

5. (क) उसके पैर में काँटा चुभ गया।

(ख) मैं बाजार जा रहा हूँ।

(ग) नदियों का जल सूखने लगा है।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

8. सर्वनाम

आओ अभ्यास करें

1. (क) संज्ञा के स्थान पर बोले जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(ख) सर्वनाम मुख्यत: छह प्रकार के होते हैं—

(1) पुरुषवाचक, (2) निश्चयवाचक, (3) अनिश्चयवाचक, (4) संबंधवाचक, (5) प्रश्नवाचक, तथा (6) निजवाचक।

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जो किसी व्यक्ति का बोध कराते हैं, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

संबंधवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जो वाक्य के दो पदों अथवा बातों में संबंध बताते हैं, संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(घ) निश्चयवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जो किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चित संकेत कराते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम—वे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित वस्तु/व्यक्ति/प्राणी का बोध नहीं कराते, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(ङ) अपने-आप, स्वयं करे।

2. (क) मैं, (ख) जैसा; वैसा, (ग) कुछ, (घ) मैं; स्वयं

3. (क) तुम, (ख) क्या मैं, (ग) तू, (घ) कुछ

4. **कौन –** महात्मा गाँधी कौन थे?

किसे – तुम यहाँ पर किसे जानते हो?

ये – ये फल किसने काटे?

मेरी – वह मेरी बहन है।

5. पुरुषवाचक सर्वनाम

निश्चयवाचक सर्वनाम

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

संबंधवाचक सर्वनाम

प्रश्नवाचक सर्वनाम

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

9. विशेषण

आओ अभ्यास करें

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

(ख) विशेषता जिन संज्ञा/सर्वनाम शब्दों की बताई जाती हैं, वे विशेष्य कहलाते हैं।

(ग) विशेषण के प्रमुख चार भेद होते हैं—

(1) गुणवाचक, (2) संख्यावाचक, (3) परिमाणवाचक तथा (4) संकेतवाचक।

(घ) गुणवाचक विशेषण—जो शब्द संज्ञा/सर्वनाम शब्दों के गुण-दोष, अवस्था, रूप, रंग तथा आकार आदि का बोध कराते हैं, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

मोहन सुंदर कमीज पहने हुए है।

(ङ) जो शब्द संज्ञा/सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराते है, वे संख्यात्मक विशेषण कहलाते है। जो शब्द संज्ञा शब्दों की माप-तौल का बोध कराते है, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते है।

(च) संकेतवाचक विशेषण—जो शब्द संज्ञा से पहले लगकर उसकी ओर संकेत करते हैं, उन्हें संकेतवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

1. वह लड़की खेल रही है।

2. स्वयं कीजिए।

3. (क) कुछ, (ख) तीन, (ग) काली, (घ) एक

4. रोगी — सुखी

दैनिक — वार्षिक

भूखा — गुणी

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

10. क्रिया

आओ अभ्यास करें

1. (क) जिन शब्दों से कार्य के करने या होने का बोध हो, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं।

(ख) धातु का मूल रूप ही क्रिया होती है।

(ग) क्रिया के दो रूप होते हैं—

(1) अकर्मक क्रिया और (2) सकर्मक क्रिया

1. अकर्मक क्रिया—अकर्मक क्रिया का शाब्दिक अर्थ है—अ

+ कर्मक = 'रहित + कर्म के' अर्थात् वह क्रिया जो कर्मरहित (कर्म के बिना) हो, अकर्मक क्रिया कहलाती है।
जैसे— मुन्ना सो रहा है।

2. सकर्मक क्रिया—सकर्मक क्रिया का शाब्दिक अर्थ है—स + कर्मक = (सप्ति + कर्म के) अर्थात् वह क्रिया जो कर्मसहित (कर्म के साथ) हो, सकर्मक क्रिया कहलाती है।
जैसे— सब्जीवाला सब्जियाँ बेच रहा है।

(घ) क्रियाओं के साथ 'क्या' या 'किसे' लगाने पर जो उत्तर मिलता है, वही कर्म कहलाता है।

2. पढ़ना; वह पढ़ रहा है।
खाना; रमेश केला खा रहा है।
पीना; मनोज पानी पी रहा है।
सोना; शीला सो रही है।
बैठना; अंकित कमरे में बैठा है।

3.

	शब्द	**क्रिया-भेद**
(क)	शोर	सकर्मक
(ख)	दूषित	सकर्मक
(ग)	निकलती	सकर्मक
(घ)	चर रही है	सकर्मक
(ङ)	देती है	सकर्मक

4.

गा –	गाना	गाता	गाएगा
पी –	पीना	पीता	पीयेगा
हँस –	हँसना	हँसता	हँसेगा
धो –	धोना	धोता	धोएगा

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

11. शब्द भंडार

आओ अभ्यास करें

1. (क) जो शब्द, अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
(ख) जो शब्द किसी शब्द के ठीक उलटे अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।
(ग) वे शब्द जो सुनने में एक-से लगते हैं, किंतु उनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं, समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे— बहू-वधू; बहु-अनेक।
(घ) वाक्य अथवा वाक्य का वह अंश, जिसे एक शब्द अथवा शीर्षक के रूप में व्यक्त किया जाये, वाक्यांशों के लिए एक शब्द कहलाता है।
(ङ) कुछ शब्दों के अर्थ एक से अधिक अर्थात् भिन्न-भिन्न होते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

2.

सुत	तनुज	बेटा
मेघ	घन	जलद
गृह	आवास	निकेतन
वासर	दिवा	दिवस

3.

कुरूप	अवज्ञा
लिखना	देना
व्यय	नापसंद
असामान्य	निरपराध

4.

किनारा	महीना
ग्रास	गोश्त
शरीर	हिस्सा
मुख	किस्मत

5. मृदुभाषी
अदृश्य
मितव्ययी
आस्तिक
कर्णप्रिय
कृतज्ञ

6.

सर्प	पर्व	साप
पत्ता	चिट्ठी	पन्ना
सिक्का	मुहर	हाथ-पैर की मुद्रा
समय	मृत्यु	व्याकरणिक काल
रंग	जाति	अक्षर

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

12. विराम-चिह्न

आओ अभ्यास करें

1. (क) संजू, सुधीर और कैलाश ताजमहल देखने गए।
(ख) नानी ने कहा — "चलो, तुम्हे एक कहानी सुनाती हूँ।"
(ग) छि:! तुमको लज्जा नहीं आती।
(घ) तुम क्या कर रहो हो?
(ङ) ओह! इतनी बड़ी नाव तो मैने देखी ही नहीं थी।

2. (क) विस्मयादिबोधक चिह्न, (ख) अल्पविराम, (ग) प्रश्नवाचक चिह्न, (घ) पूर्ण-विराम।

3. किसी गाँव में एक बूढ़ा किसान रहता था। उसके दो बेटे थे। वे सदा काम से जी चुराते थे। वे निकम्मे तथा आलसी भी थे। बूढ़े किसान ने अपने बेटो को कई बार समझाया, परंतु उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

13. अशुद्धि-शोधन

आओ अभ्यास करें

1. (क) स्वयं कीजिए।
(ख) भाषा में हमें शुद्ध शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।
(ग)

अशुद्ध	**शुद्ध**
ब्राहमण	ब्राह्मण
युधिषठिर	युधिष्ठिर
स्वास्थ	स्वास्थ्य
चिन्ह	चिह्न

2. भागीरथ — कंधा
रोशनी — शीशा
कृष्ण — संयोग
जोश — आरती
पंख — औरत
सोना — लालसा
लहंगा — महँगा

3. (क) जंगल में शेर है।
(ख) पेड़ पर कलियाँ खिल रही हैं।
(ग) आज मेरी परीक्षा है।
(घ) सूर्य पूरब से उगता है।
(ङ) कौवा बोल रहा है।

14. मुहावरे

आओ अभ्यास करें

1. (क) शब्दों का ऐसा समूह जिसका कुछ विशिष्ट अर्थ निकले, मुहावरा कहलाता है।
(ख) मुहावरों का प्रयोग करने से भाषा प्रभावशाली बन जाती है।
(ग) 1. पेट में चूहे कूदना — जोर से भूख लगना
2. मुँह में पानी आना — ललचा जाना
2. (क) दुर्भाग्य होना, (ख) घबरा जाना, (ग) बहुत कम दिखाई देना
3. (क) अपना काम निकालना, (ख) गुस्सा होना, (ग) छोटी बात को बड़ी बनाना, (घ) एकमात्र सहारा, (ङ) मौज करना।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

15. अपठित गद्यांश

आओ अभ्यास करें

1. उत्तर 1 — रक्षाबंधन का त्यौहार श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
उत्तर 2 — इस त्योहार पर बहनें अपने भाइयों की कलाई में राखियाँ बाँधती हैं।
उत्तर 3 — यह आपसी प्रेम व भाई चारे की वृद्धि करने वाला एक अनूठा पर्व है।
उत्तर 4 — रक्षाबंधन का पर्व।
2. उत्तर 1 — बाल दिवस प्रत्येक वर्ष 14 नवंबर को मनाया जाता है।
उत्तर 2 — इन दिन पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म हुआ था।
उत्तर 3 — आज का बच्चा कल का भविष्य होगा।
उत्तर 4 — बाल दिवस के कार्यक्रम के अंत में बच्चों को पुरस्कार दिए जाते हैं।
3. उत्तर 1 — मीठी बोली चीनी के समान होती है।
उत्तर 2 — मीठी बोली बोलने वाला सभी को अपना बना लेता है।
उत्तर 3 — मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु क्रोध है।
उत्तर 4 — महान लोग अपने क्रोध को वश में रखते हैं।
उत्तर 5 — इस गद्यांश से हमे यह शिक्षा मिलती है। कि हमें सदैव मीठे वचन बोलने चाहिए।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

16. पत्र लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

17. अनुच्छेद लेखन

आओ अभ्यास करें

1. (क) किसी विषय पर अपने विचार संक्षिप्त रूप में व्यक्त करने के लिए अनुच्छेद लेखन किया जाता है।
(ख) अनुच्छेद लेखन के लिए निम्नांकित बातों पर ध्यान देना चाहिए—
(क) अनुच्छेद लिखने से पहले गहन विचार करें।
(ख) मुख्य बिंदु तय करें।
(ग) विषय में क्रम बनाए रखें।
(घ) अनावश्यक उदाहरण से दूर रहें।
(ङ) वाक्यों के परस्पर संबंध को स्थापित करें।
(च) वाक्यों को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश करें।
2. स्वयं करें।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

18. कहानी लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

19. निबंध लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

व्याकरण-5

1. भाषा और व्याकरण

आओ अभ्यास करें

1. (क) वह साधन जिसके द्वारा हम दूसरे लोगों तक अपने विचार पहुँचा सकते हैं और उनके विचारों को जान सकते हैं, उसे भाषा कहते है।
(ख) इस तरह भाषा के मुख्यत: दो रूप हैं; 1. मौखिक रूप तथा 2. लिखित रूप। मोबाइल पर बात करते समय हम मौखिक भाषा का प्रयोग करते हैं।

(ग) अपने भावों एवं विचारों को लिखकर प्रकट करने के माध्यम को लिखित भाषा कहते हैं।

(घ) राष्ट्रभाषा—कोई भाषा विकसित होते-होते जब इस स्थिति में पहुँच जाती है कि संपूर्ण राष्ट्र के अधिकांश लोगों द्वारा यह व्यवहार और बोलचाल में लायी जाती है, तब वह राष्ट्रभाषा का स्थान ले लेती है। हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है।

(ङ) भाषा जिस रूप में लिखी जाती है, उसे लिपि कहते हैं। आ, इ, ई, उ, ऊ।

(च) भाषा को शुद्ध रूप में लिखना, पढ़ना और बोलना सिखाने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।

2. पंजाबी हिंदी
अंग्रेजी उर्दू

3. (क) बोलकर, (ख) लिखकर, (ग) मातृभाषा, (घ) मौखिक

4. (क) लड़की खाना खा रही है।
(ख) विद्यार्थी स्कूल जा रहे हैं।
(ग) आज बहुत गरमी है।
(घ) मोहन आज मंदिर गया है।

5. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✗

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

2. वर्ण विचार

आओ अभ्यास करें

1. (क) भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण कहलाती है। जैसे— म्, र्, आ, ऐ वर्णों का समूह वर्णमाला कहलाता है।

(ख) अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

(ग) ह्स्व स्वर — अ, इ, उ, ऋ
प्लुत स्वर — 'ऽ'

(घ) स्वरों को बोलने के लिए अन्य ध्वनियों का सहारा नहीं लेना पड़ता। इनके उच्चारण में हवा हमारे मुख से बिना रुके हुए निकलती है। स्वरों के विशिष्ट चिह्न 'मात्रा' कहलाते हैं।
ऐसी ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, व्यंजन कहलाती हैं।

(ङ) स्पर्श व्यंजन — क, ख, ठ, ड
ऊष्म व्यंजन — श, ष, स, ह

2. गमला पतंग
कागज शेरनी

3.

संयुक्त व्यंजन	अनुस्वार	अनुनासिक	विसर्ग
क्षत्रिय	हंस	अंधेरा	प्रात:
त्रिशूल	पंख	आँख	क्रमश:

4. क् + इ + त् + आ + ब् + अ श् + ए + र् + अ
च् + आ + भ् + ई अ् + आ + र् + अ + त् + ई

5.

च, छ, ज, झ, ञ	ऊष्म व्यंजन
य, र, ल, व	संयुक्त व्यंजन
क्क, ट्ट, च्च, ब्ब	स्पर्श व्यंजन
श, ष, स, ह	द्वित्व व्यंजन
क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	अन्त:स्थ व्यंजन

6. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

3. शब्द विचार

आओ अभ्यास करें

1. (क) दो या दो से अधिक वर्णों के समूह को शब्द कहते हैं।
जैसे—
माला = म् + आ + ल् + आ (चार वर्ण)

(ख) हिंदी भाषा में शब्दों को चार आधारों पर बाँटा गया है—
1. अर्थ के आधार पर 2. उत्पत्ति के आधार पर
3. रचना के आधार पर 4. प्रयोग के आधार पर

(ग) विकारी शब्द—ऐसे शब्द, जिनके रूप में लिंग, वचन तथा कारक आदि के अनुसार परिवर्तन आ जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे—
घोड़ा दौड़ रहा है। (एकवचन)
घोड़े दौड़ रहे हैं। (बहुवचन)

(घ) (क) तत्सम शब्द—संस्कृत भाषा के वे शब्द, जो हिंदी भाषा में भी मूल रूप से प्रयोग किये जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे—पुष्प, चंद्र, गृह आदि।
(ख) तद्भव शब्द—संस्कृत भाषा के वे शब्द, जो हिंदी भाषा में कुछ बदलाव के साथ प्रयोग किये जाते हैं तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे—हस्त-हाथ, आम्र-आम, दंत-दाँत आदि।

(ङ) प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते है— विकारी शब्द, अविकारी शब्द।

(च) **विकारी शब्द**–ऐसे शब्द, जिनके रूप में लिंग, वचन तथा कारक आदि के अनुसार परिवर्तन आ जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे—
घोड़ा दौड़ रहा है। (एकवचन)
घोड़े दौड़ रहे हैं। (बहुवचन)
उपर्युक्त वाक्यों में वचन के कारण कर्ता 'घोड़ा' से 'घोड़े' हो गया है; अत: यह विकारी शब्द है।
अविकारी शब्द–ऐसे शब्द जिनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है, अविकारी शब्द कहलाते हैं; इन्हें 'अव्यय' भी कहते हैं; जैसे—अचानक, अब, और, ऊपर आदि।

2.

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द
सत्य, भ्रमर	सच, नाक
उज्जवल, नेत्र	जीभ, नाक

नव, पिपासा धार, सूत्र

उस्ण, दंत कुत्ता, घर

वृषभ, घृत किताब, हस्ती

3. लोटा (✓), थाली (✓), रसीद (✓), स्याही (✓), उम्मीद (✓), ट्रेन (×), पैसा (✓), खिचड़ी (✓), सिनेमा (×), फीता (✓), पेट (✓), गमला (✓)

4. **बे** + नाम = **बेनाम** हवा + **दार** = **हवादार**

अनु + रीति = **अनुरीति** चमक + **दार** = **चमकदार**

स + पूत = **सपूत** बुरा + **ई** = **बुराई**

अति + प्रिय = **अतिप्रिय** सुंदर + **ता** = **सुंदरता**

4. वाक्य विचार

आओ अभ्यास करें

1. (क) वह पद-समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाए, वाक्य कहलाता है। उदाहरण—डाकुओं ने रेलगाड़ी लूट ली।

(ख) रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—सरल, संयुक्त तथा मिश्रित।

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—विधानार्थक, निषेधात्मक, प्रश्नवाचक, विस्मयवाचक, आज्ञावाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक, संकेतवाचक।

(ग) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं—

1. सरल वाक्य, 2. संयुक्त वाक्य, 3. मिश्रित वाक्य

(घ) सरल वाक्य—जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं; जैसे—मछलियाँ जल में रहती हैं।

संयुक्त वाक्य—जिस वाक्य में दो या दो से अधिक समान स्वर के साधारण वाक्य समुच्चयबोधक अव्यय के द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं; जैसे—रात हुई और अँधेरा हो गया।

(ङ) **अशुद्ध**

(क) छात्र और छात्राएँ पढ़ रही हैं।

(ख) लड़के और लड़की जा रही हैं।

शुद्ध

(क) छात्राएँ और छात्र पढ़ रहे हैं।

(ख) लड़की और लड़के जा रहे हैं।

2. (क) (वह) <u>आज आया था।</u>

(ख) (रश्मि) <u>आज ही कानपुर जा रही है।</u>

(ग) (भावना का भाई) <u>बीमार है।</u>

(घ) (सभी बच्चे) <u>खेल रहे हैं।</u>

3. (क) विधानार्थक वाक्य

(ख) विधानार्थक वाक्य

(ग) निषेधात्मक वाक्य

(घ) आज्ञावाचक वाक्य

(ङ) संकेतावचक वाक्य

4. (क) सरल, (ख) संयुक्त, (ग) मिश्रित, (घ) सरल, (ङ) संयुक्त, (च) संयुक्त

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

5. संज्ञा

आओ अभ्यास करें

1. (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नामों को संज्ञा कहते हैं।

(ख) संज्ञा मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती है—

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा

3. भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा – राम, कृष्ण, दिल्ली।

2. जातिवाचक संज्ञा – शिक्षक, छात्र, लड़के।

3. भाववाचक संज्ञा – वीरता, ईमानदारी, वफादारी।

(ग) जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति/प्राणी अथवा वस्तु/स्थान आदि के नाम का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(घ) जिस शब्द से किसी विशेष जाति अथवा किसी प्राणी या पदार्थों की संपूर्ण जाति का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

किसी व्यक्ति/वस्तु के गुण-दोष/भाव/दशा/अवस्था आदि का बोध कराने वाले शब्दों को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

(ङ) द्रव्यवाचक व समूहवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के भेद हैं।

2. **व्यक्तिवाचक** **जातिवाचक**

शेर, कबीरदास, शीला, महेश पक्षी, पहाड़, नदी, किताब

भाववाचक

बुढ़ापा, दुख, गरमी, यौवन

3.

संज्ञा शब्द	**भेद के नाम**
(क) गाय	व्यक्तिवाचक
(ख) चिंकी	व्यक्तिवाचक
(ग) दुकानदार	जातिवाचक
(घ) सुंदर	भाववाचक

4. **सूर्य –** सूर्य पूरब से निकलता है।

स्कूल – मैं कल स्कूल जाऊँगा।

महात्मा गांधी – महात्मा गांधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाया।

दुख – मुझे उसे बात का बहुत दुख है।

दिल्ली – दिल्ली भारत की राजधानी है।

कोयल – कोयल मीठा गीत गाती है।

5. बेचा नौकरी

पढ़ाई दुष्टता

उतराई भलाई

खरीदारी	सफेदी
दौड़	चौड़ाई
मुस्कान	साधुत्व

6. (क) ताजमहल, (ख) दया, (ग) पहाड़

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

6. लिंग

आओ अभ्यास करें

1. (क) पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द लिंग कहलाते हैं।

(ख) हिंदी भाषा में लिंग के दो भेद होते हैं—

1. पुल्लिग 2. स्त्रीलिंग

(ग) पुल्लिग—वे संज्ञा शब्द जो पुरुष जाति का बोध कराते हैं, पुल्लिग कहलाते हैं; जैसे—पिता, दादा, मामा, शेर, लड़का, चूहा, आदमी आदि।

(घ) पुरुष जाति का बोध कराने वाले संज्ञा शब्द 'पुल्लिग' कहलाते हैं।

स्त्री जाति का बोध कराने वाले संज्ञा शब्द 'स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

2.

स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पुल्लिंग	पुल्लिंग

3.

बकरी	भीलनी
लेखिका	नागिन
प्रिया	छात्र
बैल	रुद्राणी

4. (क) गाय दूध देती है।

(ख) छात्रा खेल रही है।

(ग) शेरनी जंगल में घूम रही है।

(घ) चिंकी ने खाना खा लिया।

(ङ) कल तुम स्कूल नहीं जाओगी।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

7. वचन

आओ अभ्यास करें

1. (क) ऐसे शब्द जो किसी व्यक्ति/वस्तु/प्राणी/स्थान आदि की संख्या का बोध कराते हैं, वचन कहलाते हैं।

वचन के मुख्य रूप से दो भेद होते हैं—(1) एकवचन तथा (2) बहुवचन

(ख) किसी व्यक्ति/वस्तु/प्राणी की 'एक' संख्या का बोध कराने वाले शब्द 'एकवचन' कहलाते हैं; जैसे—केला, छाता आदि।

(ग) किसी व्यक्ति/वस्तु/प्राणी की 'एक से अधिक' संख्या का बोध कराने वाले शब्द 'बहुवचन' कहलाते हैं; जैसे—केले, छाते आदि।

2.

माताएँ	बुढ़ियाँ
बेटे	वधूएँ
केले	बहनें

3.

पुस्तक	मकड़ी
चिड़ियाँ	चप्पल
नदी	ताली

4. (क) बच्चें, (ख) कुर्सियाँ, (ग) कौए, (घ) पतंग

5. (क) किताबें, (ख) बच्चा, (ग) नदियाँ, (घ) केले, (ङ) मुरगी, (च) मोतियों

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

8. सर्वनाम

आओ अभ्यास करें

1. (क) संज्ञा के स्थान पर बोले जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

(ख) सर्वनाम के छह भेद होते हैं—

(1) पुरुषवाचक, (2) प्रश्नवाचक, (3) निश्चयवाचक, (4) अनिश्चयवाचक, (5) संबंधवाचक, तथा (6) निजवाचक सर्वनाम।

(ग) **पुरुषवाचक सर्वनाम**

जो सर्वनाम शब्द किसी व्यक्ति के नाम के स्थान पर प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—मैं, वह, वे, हम, तुम, आप।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—क्यों, क्या, किसने, किसकी तथा किसे।

(घ) **संबंधवाचक सर्वनाम** — जैसा, वैसा, जितने, उतने, जो, सो।

(ङ) स्वयं कीजिए।

2. (क) 1. कोई; 2. किसी, (ख) 1. यह; 2. इनका, (ग) 1. क्या; 2. किसने

3.

सर्वनाम शब्द	भेद
(क) कोई	प्रश्नवाचक सर्वनाम
(ख) कहाँ	प्रश्नवाचक सर्वनाम
(ग) जैसी, वैसी	संबंधवाचक सर्वनाम
(घ) स्वयं	निजवाचक सर्वनाम

4. (क) कोई, (ख) मेरा, (ग) मुझे, (घ) हमें

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

9. विशेषण

आओ अभ्यास करें

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

(ख) विशेषण मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं—(1) गुणवाचक, (2) संख्यावाचक, (3) परिमाणवाचक तथा (4) सार्वनामिक।

(ग) प्रविशेषण—जो शब्द विशेषणों की विशेषता बताते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे—अंगूर बहुत खट्टे हैं।

(घ) गुणवाचक विशेषण – बुरा, भला
सार्वनामिक विशेषण – यह, वह

(ङ) विशेष्य—जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

(च) संख्यावाचक विशेषण के भेद हैं।

2.

विशेषण	**विशेषण**
ठंडी	नीचा
बड़ा	नीला
ऊँचा	हरी

3.

विशेषण	**विशेष्य**
ठंडा	पानी
नकलची	बंदर
चालाक	लोमड़ी
मोटा	हाथी

4.

(स०)	(प०)
(प०)	(स०)
(प०)	(प०)

5.

लघु	कठोर	प्राचीन
श्रेष्ठ	सरल	उच्च
योग्य	निम्न	श्रेष्ठ
अधिक	सुंदर	विशाल

10. कारक

आओ अभ्यास करें

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया, संज्ञा या सर्वनाम से जाना जाए तो उसे कारक कहते हैं।
ने, से, के।

(ख) ने, से, के लिए, में, पर, का, की, के आदि शब्द 'विभक्ति' या 'परसर्ग' या 'कारक चिह्न' कहलाते हैं।

(ग) कारक के मुख्यत: आठ भेद होते हैं—(1) कर्ता, (2) कर्म, (3) करण, (4) संप्रदान, (5) अपादान, (6) संबंध, (7) अधिकरण तथा (8) संबोधन कारक।

(घ) कर्ता कारक—संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'ने' है; जैसे—
राधा ने पत्र लिखा।

(ङ) अपादान कारक—संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिसमें किसी वस्तु या पदार्थ के अलग होने का बोध होता है, अपादान कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' है; जैसे—
आंधी में पेड़ से आम गिरे।

2. (क) स्वयं कीजिए।

(ख) स्वयं कीजिए।

3. (क) संप्रदान कारक, (ख) कर्म कारक, (ग) संबोधन कारक, (घ) अपादान कारक, (ङ) करण कारक।

4. (क) पर, (ख) से, (ग) ने; को, (घ) में

5. को – रवि ने राम को पेंसिल दी।
ने – श्वेता ने आम खाया।
के द्वारा – प्रभु राम के द्वारा रावण मारा गया।
से – आकांक्षा ने पापा से सेब लिया।
के लिए – मैं मंदिर में पूजा करने के लिए जा रहा हूँ।
का – यह अशोक का बस्ता है।
में – खेत में बैल घुस गया।
अरे! – अरे! क्या हुआ तुम्हें?

6. स्वयं कीजिए।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

11. क्रिया

आओ अभ्यास करें

1. (क) जिस शब्द से किसी कार्य का बोध होता है, वह शब्द क्रिया कहलाता है।

(ख) क्रिया के दो रूप होते हैं—अकर्मक तथा सकर्मक।

(ग) क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

(घ) क्रिया के साथ 'क्या' और 'किसको' लगाने से जो उत्तर मिलता है, वह वाक्य में प्रयुक्त दोनों कर्मों को स्पष्ट करता है; जैसे—
क्या पढ़ाते हैं — व्याकरण
किसको पढ़ाते हैं — छात्र को

(ङ) वाक्य में जब क्रिया के साथ कर्म नहीं होता, तो वह अकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे—
1. श्वेता पढ़ रही है।
जिस वाक्य में क्रिया, कर्म के साथ होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—
1. किसान हल चला रहा है।

2. (क) मुझे हँसना अच्छा लगता है।

(ख) मैं कल पूरी रात पढूँगा।

(ग) मेरे साथ बैठकर खाना खाओ।

(घ) मैं कल दिल्ली जाऊँगा।

3. (क) नाच, (ख) बजा, (ग) खा, (घ) चला

4.

कर्ता	कर्म	क्रिया
सोनम	खाना	खा रही है।
अमित	कार	धो रहा है।
सूर्य	आकाश में	चमक रहा है।
मोनिका	पत्र	लिख रही है।

12. अव्यय (अविकारी शब्द)

आओ अभ्यास करें

1. (क) जिन शब्दों का क्षय नहीं होता, उन्हें अव्यय शब्द कहते हैं। इनमें लिंग, वचन या कारक के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।

(ख) अव्यय मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं—(1) क्रिया-विशेषण, (2) संबंधबोधक, (3) समुच्चयबोधक तथा (4) विस्मयादिबोधक।

(ग) क्रिया-विशेषण अव्यय के निम्नलिखित चार भेद हैं—

1. कालवाचक क्रिया-विशेषण 2. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
3. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण 4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

(घ) जिन अव्ययों द्वारा संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध जाना जाए, वे संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं; जैसे—आगे, बाहर, आर-पार, द्वारा, विपरीत, हेतू, दूर, अतिरिक्त आदि।

1. वृक्ष के नीचे लड़का खड़ा है। 2. रवि कुर्सी पर बैठा है।

(ङ) विस्मयादिबोधक वे अविकारी शब्द हैं, जो हर्ष, घृणा, क्रोध, ग्लानि, विस्मय आदि भावों को प्रकट करते हैं। जैसे—

1. अरे! इतनी जल्दी तैयार हो गये।
2. छि:! छि:! कितना घृणित कार्य है।

(च) जो अव्यय दो शब्दों, दो पदों, दो पदबंधों या दो वाक्यों को परस्पर जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—और, या, इसलिए, क्योंकि, तथा, तथापि, तो आदि।

2. अरे! – अरे! इतनी जल्दी आ गए।
और – सौरभ और श्वेता दोनो भाई-बहन हैं।
के नीचे – रामू पेड़ के नीचे सो रहा है।
के बाद – रविवार के बात सोमवार आता है।
यदि – यदि तुम मेहनत करते, तो पास हो जाते।
काश! – काश! मैं आज वहाँ होता।
छि:! छि:! – छि:! छि:! तुम्हे शर्म नहीं आती।

3. 1. वाह!, 2. और, 3. बस, 4. अरे! 5. तो, 6. के ऊपर, 7. इसलिए, 8. परंतु, 9. कि, 10. के पास, 11. में, 12. धीरे-धीरे

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

13. शब्द भंडार

आओ अभ्यास करें

1. (क) समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थक शब्द कहते हैं; जैसे—माँ के नाम इस प्रकार हैं—जननी, धात्री, माता।

(ख) जो शब्द किसी शब्द के ठीक उलटे अर्थ का ज्ञान कराते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं। विलोम का दूसरा नाम विपरीतार्थक भी है।
जैसे— खरा—खोटा

(ग) वह उचित एवं संक्षेप शब्द, जो वाक्यांश अथवा अनेक शब्दों के लिए एक शीर्षक का कार्य करता है, 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहलाता है।
उदाहरण के लिए—**दया करने वाला—दयालु**।

(घ) जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।
जैसे— अंक—गोद, संख्या, अध्याय, चिह्न, प्रति, नाटक का भाग

(ङ) कुछ शब्द ध्वनि अथवा वर्तनी की दृष्टि से काफी कुछ एक जैसे लगते हैं, परंतु वे एक जैसे न होकर भिन्न अर्थ वाले होते हैं। ऐसे शब्दों में कोई समानता नहीं होती। इन्हें ही समान लगने वाले भिन्नार्थी शब्द कहते हैं। जैसे—धेनु—एक गाय है, जबकि धनु (जो उच्चारण में समान लगती है) का अर्थ है—धनुष।

2.

नरेश	भूपति	भूप
मेघ	घन	जलद
पानी	नीर	पय
स्वर्ण	हेम	कंचन

3.

कुरूप	नास्तिक
सदय	दोष

4.

जिसके पास धन न हो।	जिसमे भावनाएँ हो।
जो पढ़ा ना गया हो।	जिसमे दया हो।
जिसके अंदर जानने की इच्छा हो।	जो ईश्वर को मानता हो।

5.

वर्ष	समय	
विश्राम	राहत	सुविधा
जल	प्राण	वायु

6. (क) आग
हवा
(ख) घर
विश्व
(ग) दफा
दिन
(घ) दूसरा
सुगंध

14. मुहावरे

आओ अभ्यास करें

1. (क) 'मुहावरा' एक ऐसा वाक्यांश होता है, जिसके द्वारा अधिक से अधिक बात को संक्षेप में कहकर भाषा को सुंदर और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

(ख) मुहावरे का अर्थ सामान्य न होकर एक विशिष्ट प्रकार का होता है। जैसे—टोपी उछालना—इस मुहावरे का सामान्य अर्थ—टोपी उछालना न होकर अपमानित करना होता है, जो अपने आप में एक विशिष्ट अर्थ है।

(ग) 1. ऊँची फेंकना — बहुत अधिक गप्पें हाँकना
राजकुमार सदा ऊँची फेंकता रहता है।
2. कच्ची गोली खेलना — असफल प्रयास करना
राकेश कच्ची गोलियाँ नहीं खेलता, वह अपने मकसद में सफल होकर ही रहेगा।

2. (क) सफल होना, (ख) बिना विचारे काम करना, (ग) खुश होना, (घ) गायब होना, (ङ) कष्ट उठाना

3. (क) आकाश कच्ची गोलियाँ नहीं खेलता, वह अपने मकसद में सफल होकर रहेगा।
(ख) कल मेरी और पंकज की आँखे चार हो गई।
(ग) नवीन सदा ऊँची गप्पें फेंकता रहता है।
(घ) आजकल तो आप ईद का चाँद हो रहे है।
(ङ) यहाँ पर अवनी की दाल नहीं गलती है।

4. 1. → (ग)
2. → (घ)
3. → (ङ)
4. → (ख)
5. → (क)

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

15. लोकोक्तियाँ

आओ अभ्यास करें

1. (क) लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ है—लोक '+' उक्ति अर्थात् 'लोक में प्रचलित उक्ति'। लोकोक्तियों का प्रयोग कथन को पुष्ट करने के लिए किया जाता है।
(ख) लोकोक्तियों के द्वारा हम बड़ी-से-बड़ी बात को संक्षेप में कह देते हैं जिसके अर्थ में गहराई तथा सरलता होती है। उदाहरणार्थ—साँप मरे न लाठी टूटे।
इस लोकोक्ति का अर्थ है, बिना हानि के काम बनाना।
(ग) 1. लेना एक न देना दो—कोई मतलब नहीं।
2. नाच न जाने आँगन टेढ़ा—अपनी कमी का दोष दूसरों पर मढ़ देना।
3. लातों के भूत बातों से नहीं मानते—नीच लोग बिना पिटे नहीं मानते।
4. खोदा पहाड़ निकली चुहिया—परिश्रम अधिक, फल कम।
5. कंगाली में आटा गीला—संकट में और संकट आ पड़ना।

2. (क) अपने किए कर्मो का फल भोगना पड़ता है।
(ख) जहाँ रहते हैं वहाँ की रीति भी अपनानी पड़ती है।
(ग) ओछा व्यक्ति अधिक दिखावा करता है।
(घ) अपनी कमी का दोष दूसरो पर मढ़ देना।
(ङ) थोड़े दिन आनंद, फिर वही कष्ट।

3. स्वयं कीजिए।

4. 1. दूर के ढोल सुहावने लगते हैं।
2. लातों के भूत बातों से नहीं मानते
3. खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
4. लेना एक न देना दो।
5. मुँह में राम बगल में छुरी।

(क) कोई मतलब नहीं।
(ख) परिश्रम अधिक फल कम।
(ग) दूर की वस्तु अच्छी लगती है।
(घ) बाहर से अच्छा अंदर से बुरा।
(ङ) बुरे लोग बिना दंड के नहीं मानते।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

16. विराम चिह्न

आओ अभ्यास करें

1. (क) विराम का अर्थ है—रुकना; जैसे—
1. वर्णिका बोली, "हम सब पिकनिक पर जाएँगे"।
2. अरे! आप कब आए?
ऊपर दिए गए चिह्न ',', '!', "," तथा '?' विराम चिह्न हैं।
(ख) प्रश्नवाचक चिह्न वाक्य के अंत में लगाया जाता है।
(ग) भाषा के भागों को भली भाँति समझने के लिए विराम चिह्नों की आवश्यकता होती है।
(घ) पूर्ण विराम (।)—प्रत्येक वाक्य के पूरा होने पर पूर्ण विराम लगाया जाता है; जैसे—
- राम की माता का नाम कौशल्या था।
- आज बहुत गरमी है।

अल्प विराम (,)—वाक्य में कथन को स्पष्ट करते हुए जहाँ थोड़ा रुकना पड़े, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—
- कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकेई तीनों राजा दशरथ की पत्नियाँ थीं।

(ङ) विराम चिह्नो के प्रयोग से हम वाक्यों के भावों को भली-भाँति समझ सकते हैं।

2. (क) (—)
(ख) (" ")
(ग) (?)
(घ) (–)

3. (क) मोहन, रोहन दोनों भाई हैं।
(ख) अरे! तुम मान क्यो नही जाते।
(ग) एक किसान था। उसके चार बेटे थे, वे आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे।
(घ) हमे सुख-दुख में एक-सा रहना चाहिए।
(ङ) तुम्हे जाना है? बताओ, वरना मैं अकेला चला जाऊँगा।
(च) उसने कहा – "मुझे दिल्ली जाना है।"
(छ) माता के पर्यायवाची होते है– अंबा, जननी, जन्मदात्री।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।

17. अपठित गद्यांश

आओ अभ्यास करें

1. 1. (ग), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क), 5. (ख)

2. 1. (ग), 2. (क), 3. (ख), 4. (ग), 5. (क)

18. संवाद लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

19. अनुच्छेद लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

20. पत्र लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

21. कहानी लेखन

आओ अभ्यास करें

स्वयं करें।

22. निबंध लेखन

आओ अभ्यास करें

1. (क) निबंध का अर्थ है 'बँधा हुआ रूप'। वह गद्य रचना, जिसमें किसी विषय के बारे में अपनी भाषा में क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित ढंग से विचार प्रकट किए जाते हैं, निबंध कहलाता है।

(ख) निबंध के प्रमुख चार भेद हैं—

1. विचारात्मक निबंध—जो निबंध सामाजिक, राजनीतिक तथा दार्शनिक दृष्टि से समाज, साहित्य, धर्म आदि विषयों के विश्लेषण हेतु विचार प्रकट करते हैं, वे विचारात्मक निबंध कहलाते हैं।
2. भावात्मक निबंध—जब सामाजिक तथा व्यक्तिगत अनुभवों को रोचक व भावपूर्ण ढंग से निबंध के रूप में लिखा जाता है, तो वे भावात्मक निबंध कहलाते हैं।
3. विवरणात्मक निबंध—काल्पनिक घटनाओं, ऐतिहासिक स्थलों, संस्मरणों आदि पर लिखे गये विचार, विवरणात्मक निबंध कहलाते हैं।
4. वर्णनात्मक निबंध—प्राकृतिक दृश्य, घटना, मेले आदि की चर्चा पर आधारित विचार वर्णनात्मक निबंध कहलाते हैं।

(ग) निबंध लिखते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए—

1. विषय, जिस पर निबंध लिख रहे हैं, उसके बारे में अच्छी तरह अध्ययन कर लें।
2. निबंध की एक रूपरेखा बना लेनी चाहिए और उसी के अनुरूप लिखते चले जाएँ।
3. निबंध की भाषा सरल, सुबोध तथा प्रभावशाली होनी चाहिए।
4. विचारों में तारतम्यता होनी चाहिए।
5. वाक्य की पुनरावृत्ति से बचना चाहिए।
6. आधा निबंध लिखने के बाद उसे संक्षिप्त करते जाइए तथा अंत में छोटा-सा सार देना चाहिए।

2. स्वयं करें।

रचनात्मक कार्य

स्वयं करें।